प्रशिक्षण शिष्यों को प्रशिक्षित करना
सत्र 22: शिष्यत्व संबंधपरक है (10b)

रॉन लाइवली, एम.डिव., एम.ए. द्वारा प्रस्तुत – BiblicalMentoring.org (अध्ययन)

चरण 1: प्रारंभिक प्रार्थना

चरण 2: हर व्यक्ति स्मृति श्लोक उद्धृत करता है: छंद चरण: **जकर्याह 8:16-17**
16 ये वे कार्य हैं जो तुम करोगे: एक-दूसरे से सत्य बोलो;
अपने द्वारों में ऐसे निर्णय दो जो सत्य हों और शांति लाएं;
17 अपने दिलों में बुराई मत बनाओ,
और झूठी कसम से प्रेम न करो, क्योंकि इन सभी चीज़ों से मैं घृणा करता हूँ, प्रभु ने घोषणा की।"

चरण 3: *बाइबल अध्याय के पूरे या कुछ हिस्से को पढ़ें और चर्चा करें* - **जकर्याह 8**
लिंक: **https://www.biblegateway.com/passage/?search=Zechariah%208&version=ESV**

***चरण 4**: व्यक्तिगत आवेदन और/या समूह चर्चाओं के लिए प्रश्न:*

एक. वार्म्थ को कवर करने के बाद, फिलिप्स एक शिष्य के साथ स्वस्थ संबंध के चार और गुणों को कवर करते हैं: निष्ठा, निष्पक्षता, परिपक्वता और उपलब्धता।

दो. वफादारी: लेखक कहते हैं कि वफादारी किसी अन्य व्यक्ति के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता है और आपका शिष्य (प्रशिक्षु) कभी भी आपकी वफादारी पर सवाल नहीं उठाना चाहिए।

तीन. निष्पक्षता: निष्पक्षता का अर्थ है प्रत्येक व्यक्ति को ईश्वर द्वारा अद्वितीय रूप से प्रतिभाशाली मानना, जिसमें भिन्नताएँ हैं, लेकिन एक मसीह जैसे चरित्र के लिए लक्ष्य है।

चार. परिपक्वता: वे कहते हैं कि परिपक्वता आप दोनों के लिए परमेश्वर के साथ एक स्थिर और विश्वासयोग्य यात्रा है।

पाँच. उपलब्धता: अपने शिष्य के लिए उपलब्ध होना बहुत महत्वपूर्ण है। फिलिप्स कहते हैं कि जब आपने परमेश्वर के आदेश का पालन किया और उनका अनुसरण किया, तो आपका सारा समय ईश्वर का समय बन गया ताकि आप किसी भी ऐसे तरीके से उपयोग कर सकें जो उन्हें सबसे अच्छा सम्मान देता हो।

***चरण 5**: पुस्तक की सामग्री पढ़ें और चर्चा करें:*
अध्याय 10b, लेखक के अनुसार – कीथ फिलिप्स:

वफादारी
वफादारी किसी अन्य व्यक्ति के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता है। इसका मतलब है हर परिस्थिति में उसके साथ खड़ा रहना। कुछ चीजें रिश्ते को मजबूत नहीं करती जैसे संकट का सामना साथ में करना। "अगर तुम किसी से प्यार करते हो तो तुम उसके प्रति वफादार रहोगे चाहे कीमत कुछ भी हो। तुम हमेशा उस पर विश्वास करोगे, हमेशा उससे सबसे अच्छा उम्मीद करोगे, और हमेशा उसकी रक्षा में डटे रहोगे" (1 कुरिन्थियों 13:7 पाउंड)। तुम्हारा शिष्य कभी भी तुम्हारी वफादारी पर सवाल नहीं उठाना चाहिए। अगर वह तुम्हें निराश करता है, तो कभी भी उस पर विश्वास की कमी न दिखाओ या यह संकेत न दो कि तुम रिश्ता छोड़ना चाहते हो। अपनी निराशाओं को केवल अपने नेताओं के साथ साझा करो जो तुम्हें उसे बनाने में मदद कर सकते हैं। इफिसियों 4:29 निर्देश देता है, "कोई अशुभ शब्द तुम्हारे मुंह से न निकलो, बल्कि केवल ऐसा शब्द जो वर्तमान की जरूरत के अनुसार शिक्षा के लिए अच्छा हो...." ऐसे समय आए हैं जब मैंने ईमानदारी से लोगों पर विश्वास किया और उनकी पूरी रक्षा की और बाद में पाया कि मैं गलत था। लेकिन मैंने कभी वफादार होने का पछतावा नहीं किया। एक मृत व्यक्ति खुद को इस्तेमाल या दुरुपयोग महसूस नहीं करता। अपने शिष्यों के प्रति वफादार रहने में उसे खोने के लिए कुछ नहीं है।

निष्पक्षता

निष्पक्षता मांगती है कि आप निष्पक्ष रहें। "क्योंकि परमेश्वर के साथ कोई पक्षपात नहीं है" (रोमियों 2:11), और न ही उसके लोगों के साथ होना चाहिए (याकूब 2:1)। आपका शिष्य जानना चाहिए कि आप निष्पक्ष हैं। मुझे नौ ऐसे लोगों में निवेश करने का सौभाग्य मिला है जो अमेरिका भर में हमारे आंतरिक शहर मंत्रालयों का निर्देशन करते हैं। उनकी पृष्ठभूमि विविध है, बौद्धिक क्षमताएं विविध हैं, अनूठी व्यक्तिगतताएं हैं और विभिन्न क्षमताएं हैं। मैं हर निदेशक को उसकी पहचान के रूप में स्वीकार करने और उसकी विशेष प्रतिभाओं और कौशलों को विकसित करने का प्रयास करता हूँ। मैंने परमेश्वर से अनुरोध किया कि वह मेरी किसी भी व्यक्तित्व पसंद को दूर करने में मदद करे जो मेरी उपयोगिता में बाधा डाल सकती है और मुझे एक शिष्य को प्रेरित करने से बचाए, उसकी वृद्धि की तुलना दूसरे से करके। हम सभी जिस एकमात्र समान मानक की ओर प्रयास करते हैं वह मसीह जैसा चरित्र है। बाइबल समझ, शास्त्र को बनाए रखने या मंत्रालय के प्रदर्शन में समानता की मांग करना या आशा करना अनुचित है। प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर की अपनी अद्वितीय रचना है और उसके अनुसार व्यवहार किया जाना चाहिए। यदि आप अपने शिष्य को एक कठोर, पूर्वनिर्धारित योजना के साथ नेतृत्व करने की कोशिश करते हैं, तो यह विनाशकारी होगा। यदि आप उसे एक निश्चित इच्छित ढांचे में फिट करने की कोशिश करेंगे तो आप निराश होंगे। न्याय मांगता है कि आप उसकी विशिष्टता का सम्मान करें और मसीह के शरीर की विविधता का आनंद लें। यदि आपका शिष्य शरीर के किसी अन्य सदस्य पर गलत आरोप लगाता है, तो दिखाएं कि आप प्रत्येक व्यक्ति के प्रति वफादार और न्यायसंगत हैं। जब तक आप दोनों से बात न करें, संभवतः साथ में, तब तक सहमत या असहमत न हों। "... एक त्वरित जवाब सब कुछ बर्बाद कर सकता है" (नीतिवचन 13:3 पाउंड)। हर दृष्टिकोण को सुनें। प्रार्थना करना। फिर उत्तर परमेश्वर के वचन में और अपने नेताओं के माध्यम से खोजें। अपने शिष्य को उसके उद्देश्य और उद्देश्यों पर पुनः ध्यान केंद्रित करने में मदद करें। उसे क्षमा मांगने और देने के लिए प्रशिक्षित करें। साथ मिलकर शरीर में एकता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को परमेश्वर की महिमा के लिए पुनः पुष्टि करें। यदि आपका शिष्य जानता है कि यह आपकी नीति है, तो वह जकर्याह 8:16 (LB) का पालन करेगा: "... सच बोलो। न्यायसंगत रहो। सभी के साथ शांति से रहो।"

परिपक्वता

परिपक्वता परमेश्वर के साथ एक स्थिर, विश्वासयोग्य चाल है। यीशु ने कहा, "... मैं हमेशा वही करता हूँ जो उसे प्रसन्न करते हैं" (यूहन्ना 8:29)। पौलुस ने कहा, "तुम गवाह हो, और परमेश्वर भी, कि हमने तुम विश्वासियों के प्रति कितना भक्तिपूर्ण, ईमानदार और निर्दोष व्यवहार किया" (1 थिस्सलुनीकियों 2:10)। चूंकि तुम अपने शिष्य के जीवन के हर क्षेत्र में पूर्णता उत्पन्न करने का प्रयास करते हो, तुम्हें लगातार परिपक्व होना चाहिए। वह तुम्हारे उदाहरण के माध्यम से दासत्व, संवेदनशीलता और जिम्मेदारी के प्रति सही दृष्टिकोण सीखेगा। वह तुम्हारे व्यवहार की नकल करेगा और तुम्हारी परिपक्वता का सम्मान करेगा। इसके विपरीत भी सच है। तुम्हारा शिष्य निगरानी करेगा कि तुम जो सिखाते हो उसे जीते हो या नहीं। वह तुम्हें तब भी देखेगा जब तुम इसके बारे में अनजान हो। एक व्यंग्यात्मक टिप्पणी, एक संदिग्ध मजाक, अपने नेताओं पर विश्वास की कमी या ईर्ष्या देखी जाएगी और पुनः उत्पन्न की जाएगी। परिपक्वता कभी भी शिष्य संबंध के निर्माण में बाधा नहीं डालती। जब मार्ज हमारे स्टाफ में नई थीं, तो वह कुछ किशोरों के साथ घनिष्ठ दोस्ती बनाने के लिए इतनी उत्सुक थीं कि वे लगभग हर काम करती थीं। उनका उत्साह प्रशंसनीय था और वे लड़कियों द्वारा लोकप्रिय हो गईं। लेकिन महीनों के दौरान, हमने देखा कि जब भी किसी किशोर को कोई गंभीर समस्या होती या किसी महत्वपूर्ण निर्णय के लिए मार्गदर्शन चाहिए होता, वे मार्ज के बजाय हमारी महिला निदेशक से बात करते थे। मार्ज केवल "लड़कियों में से एक" बन गई थीं और उनका सम्मान नहीं था। अपरिपक्वता स्वीकृति के लिए बहुत बड़ी कीमत है।

प्राप्यता

आपका शिष्य शरीर में आपकी सर्वोच्च प्राथमिकता है, जब तक कि आप विवाहित न हों। यदि आप विवाहित हैं, तो वह आपके परिवार के बाद दूसरे स्थान पर है। हालांकि पौलुस ने त्रोआस में सुसमाचार प्रचार करने के लिए एक खुला द्वार पाया, वह तीतुस को खोजने के लिए चला गया (2 कुरिन्थियों 2:12,13)। तीतुस पौलुस के लिए पूरे त्रोआस शहर से अधिक महत्वपूर्ण था। आपको अपने शिष्य को अपनी प्राथमिकता बनाए रखने के लिए दृढ़ संकल्प रखना चाहिए। आप और आपके शिष्य को एक-दूसरे तक अधिकतम पहुंच की आवश्यकता है ताकि वे एक गुणवत्तापूर्ण संबंध बना सकें। यदि आप एक-दूसरे को जानने में कठिनाई महसूस कर रहे हैं या आपका शिष्य असुरक्षित है, तो आपको तीन घंटे से अधिक औपचारिक साप्ताहिक बैठकों की आवश्यकता हो सकती

है। जहां एक बैठक प्रशिक्षण, बाइबल अध्ययन और जवाबदेही के लिए आरक्षित होनी चाहिए, वहीं अतिरिक्त समय संगति, साझा करने और साथ में करने के लिए निर्धारित किए जा सकते हैं। अपने शिष्य में निवेश करने और चुनौती देने के लिए उपलब्ध रहें, भले ही उसके कई प्रश्न या सीखने की तीव्र इच्छा बहुत समय मांगती हो। उसकी उत्सुकता को दबाएं नहीं। समायोजन या संकट के समय विशेष रूप से संवेदनशील रहें। अगर उसे अशुद्ध विचारों या "होना" के बजाय "करना" जैसी लतों से जूझना पड़ता है, तो दिन-रात उसकी मदद करें।

जब आपने मसीह के आदेश का पालन किया कि उनका अनुसरण करें, तो आपने अपनी समय-सारणी निर्धारित करने का अधिकार त्याग दिया। "... तुम अपने नहीं हो। क्योंकि तुम्हें एक कीमत पर खरीदा गया है..." (1 कुरिन्थियों 6:19,20)। तुम्हारा सारा समय परमेश्वर का समय बन गया कि उसे किसी भी तरह से उपयोग किया जा सके जो उसे सबसे अच्छा सम्मान दे। अगर तुम अपने शिष्य के लिए बहुत व्यस्त हो जब उसे तुम्हारी जरूरत हो, तो तुम बहुत व्यस्त हो। एक शिष्य, जिसे मैं दिल से प्यार करता हूँ, ने मुझे रात के दो बजे फोन किया और टूटी हुई आवाज़ में बस पूछा कि क्या हम तुरंत मिल सकते हैं। बिना हिचकिचाए मैं नियत स्थान पर भागा और कई घंटे प्रार्थना और परामर्श में बिताए। यह हमारे प्रेम और प्रतिबद्धता को मजबूत करने के लिए मैंने अब तक का सबसे बुद्धिमान निवेश किया। वह जानता था कि मैं उसे प्राथमिकता मानता हूँ और जब उसकी दुनिया ढह रही थी, तो मैं वहाँ था ताकि टुकड़ों को फिर से जोड़ने में मदद कर सकूँ। ऐसे क्षण आपके शिष्य के जीवन पर अमिट स्याही में स्वस्थ संबंध के सिद्धांतों को दर्ज करते हैं। हाल ही में विचिटा की एक यात्रा पर मेरा कार्यक्रम स्टाफ प्रशिक्षण, सार्वजनिक भाषण और निजी बैठकों से भरा था। जब हमारे निदेशक, अल एवर्ट, और मैं एक नियुक्ति से दूसरे अपॉइंटमेंट तक ड्राइव कर रहे थे, तो हमने उनके मंत्रालय के कई सवालों की लंबी सूची पर चर्चा की। मेरी अंतिम बैठक अपेक्षा से लंबी चली, जिससे मेरी उड़ान छूट गई। चूंकि अगला विमान चार घंटे बाद ही रवाना हुआ, मैंने थकान से सुझाव दिया कि हम एक कप कॉफी लें। जब हम बैठे, तो मैंने कुछ दबाव, समय सीमाएं और आपात स्थितियों को साझा किया जिनसे मैं निपट रहा था। अल का प्रोत्साहन एक ठंडी हवा की तरह था जो एक तपते हुए गर्मी के दिन में आती हो। जल्द ही मैं अपने सपनों और लक्ष्यों पर विचार करने लगा— कि मुझे विश्वास था कि भगवान हम दोनों की अपेक्षा से कहीं अधिक महान कार्य करने वाले हैं। अल ने मेरी दृष्टि की पुष्टि की और कई प्रेरणादायक विचार जोड़े जो भगवान ने उन्हें दिए थे। समय तेजी से बीता। जब मैं विमान में चढ़ा, तो मैं विश्वास नहीं कर पा रहा था कि मैं कितना तरोताजा महसूस कर रहा था। कुछ दिन बाद, अल ने मुझे फोन पर बताया कि उनके लिए कॉफी शॉप में हमारा समय मेरे विचिटा प्रवास का सबसे बड़ा आकर्षण था— और यह निश्चित रूप से मेरा था। कीमती समय को अकेले अकेले या अकेले बैठकर लंबी ड्राइव करने में बर्बाद न करें। अपने शिष्य को अपने साथ रहने के लिए आमंत्रित करें। ये पढ़ाने, संगति करने और लगातार प्रभाव डालने के अनमोल अवसर हैं। यीशु "अपने शिष्यों के साथ अधिक समय बिताने के लिए प्रचार से बचने की कोशिश करते थे, उन्हें सिखाते हुए..." (मार्क 9:30 पाउंड)। वे कभी बहुत व्यस्त नहीं रहते थे, कभी उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए थके नहीं होते थे।

चरण 6: *व्यक्तिगत प्रार्थना अनुरोध साझा करें, फिर प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे की मांगों के लिए प्रार्थना करे।*

पृष्ठ 104-109

स्रोत: डॉ. कीथ फिलिप्स द्वारा द मेकिंग ऑफ अ डिसाइपल। प्रकाशक: फ्लेमिंग एच. रेवेल कंपनी, 1981। ISBN 0-8007-1181-5। परिचय: रॉबर्ट ई. कोलमैन। सामग्री (अध्ययन प्रश्नों को छोड़कर) पुस्तक से बिना संशोधन के ली गई है।

संशोधित 20261121